THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-04 | January-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

अनूप कुमार
16–ऐ, केलाबाग चौराहा
बरेली (उत्तर प्रदेश)
Email: modernanoop@gmail.com

सारांश

वर्तमान युग तीव्र वैज्ञानिक, तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों का युग है, जिसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप शिक्षा का स्वरूप भी निरंतर परिवर्तित हो रहा है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन या बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। इस सर्वांगीण विकास में नैतिक मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के आचरण, व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक संबंधों को दिशा प्रदान करते हैं और उसे समाज में एक जिम्मेदार, संवेदनशील तथा आदर्श नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं। सत्य, ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा तथा कर्तव्यपरायणता जैसे गुण नैतिक मूल्यों के प्रमुख आयाम हैं, जिनका विकास विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, तकनीकी प्रगति तथा वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण शिक्षा प्रणाली अधिकतर परीक्षा–केंद्रित और परिणाम–उन्मुख होती जा रही है, जिसके कारण कई बार नैतिक मूल्यों के विकास की उपेक्षा भी देखने को मिलती है। ऐसे में विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के स्तर का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इस शोध में बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 एवं 12 के विद्यार्थियों को अध्ययन का आधार बनाया गया। अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया, जिसमें हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राएँ शामिल थे। आँकड़ों के संकलन के लिए डॉ. सुरभी अग्रवाल द्वारा निर्मित 'नैतिक मूल्य मापनी' का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात के माध्यम से किया गया। अध्ययन की परिकल्पनाओं में यह मान लिया गया था कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। शोध के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। हिंदी माध्यम के छात्रों का नैतिक मूल्य का मध्यमान अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया। इसी प्रकार छात्राओं के संदर्भ में भी हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया। इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यालय का माध्यम, शैक्षिक वातावरण

तथा सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास को प्रभावित करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी शिक्षा केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास पर भी समान रूप से ध्यान देनी चाहिए। विद्यालयों में ऐसा वातावरण विकसित किया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करे। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से यह समझने में सहायता मिलती है कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए किस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था और विद्यालयी वातावरण अधिक प्रभावी हो सकता है।

मुख्यशब्द : *हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम, माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, नैतिक मूल्य*

प्रस्तावना

वर्तमान युग तीव्र परिवर्तन का युग है। विज्ञान, तकनीक, वैश्वीकरण तथा संचार क्रांति ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों ने जहाँ एक ओर मानव जीवन को सुविधाजनक और प्रगतिशील बनाया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर दी हैं। आज के समय में केवल बौद्धिक विकास या शैक्षिक उपलब्धि ही पर्याप्त नहीं मानी जाती, बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास में नैतिक मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। नैतिक मूल्य व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता प्रदान करते हैं तथा उसे समाज में एक जिम्मेदार और आदर्श नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का विकास अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना भी है। इस समग्र विकास में नैतिक मूल्यों का विशेष स्थान है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, सहिष्णुता, सहयोग, अनुशासन, करुणा, दया, और परोपकार जैसे गुण नैतिक मूल्यों के प्रमुख उदाहरण हैं। जब विद्यार्थी इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तब वे न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल होते हैं बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। विद्यालय इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बालक अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष व्यतीत करता है और विभिन्न सामाजिक तथा नैतिक व्यवहारों को सीखता है।

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा के विभिन्न माध्यम प्रचलित हैं, जिनमें हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम प्रमुख हैं। हिंदी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा मुख्यतः भारतीय भाषा और संस्कृति के आधार पर प्रदान की जाती है, जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा होती है और वहाँ आधुनिक तथा वैश्विक दृष्टिकोण पर अधिक बल दिया जाता है। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण, शिक्षण पद्धति, सांस्कृतिक प्रभाव तथा सामाजिक परिवेश कुछ हद तक भिन्न हो सकता है। यही कारण है कि इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विचारों, दृष्टिकोणों तथा नैतिक मूल्यों में भी कुछ अंतर देखने को मिल सकता है।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर होते हैं। यह वह समय होता है जब उनके विचार, आदर्श, जीवन दृष्टि तथा नैतिक मान्यताएँ विकसित होती हैं। इस अवस्था में परिवार, विद्यालय, शिक्षक, मित्र समूह तथा सामाजिक वातावरण का विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि इस स्तर पर विद्यार्थियों को उचित नैतिक शिक्षा और सकारात्मक वातावरण प्राप्त होता

है, तो वे जीवन में सही दिशा का चयन कर पाते हैं। इसके विपरीत यदि इस स्तर पर नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती है, तो विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, स्वार्थपरता और सामाजिक असंवेदनशीलता जैसी प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं।

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि शिक्षा का स्वरूप अधिकतर प्रतिस्पर्धात्मक और परीक्षा–केंद्रित होता जा रहा है। विद्यार्थी और अभिभावक दोनों ही अधिक अंक प्राप्त करने तथा बेहतर कैरियर बनाने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इस प्रक्रिया में कई बार नैतिक मूल्यों के विकास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। परिणामस्वरूप समाज में नैतिक पतन, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ बढ़ती हुई दिखाई देती हैं। इस संदर्भ में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया जाए और यह समझने का प्रयास किया जाए कि विभिन्न शैक्षिक माध्यमों का उनके नैतिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है।

नैतिक मूल्यों का विकास केवल पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से नहीं होता, बल्कि यह विद्यालय के संपूर्ण वातावरण, शिक्षकों के आचरण, सह–पाठयक्रम गतिविधियों तथा विद्यार्थियों के आपसी संबंधों से भी प्रभावित होता है। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आदर्श का कार्य करते हैं और उनका व्यवहार विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव डालता है। इसी प्रकार विद्यालय में आयोजित होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, समूह कार्य तथा नैतिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम भी विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों के विकास में सहायक होते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जो विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करे।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। नैतिक मूल्य किसी भी समाज की आधारशिला होते हैं, जो व्यक्ति के आचरण, व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक संबंधों को दिशा प्रदान करते हैं। आज के आधुनिक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों के सामने अनेक प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी चुनौतियाँ उपस्थित हैं, जिनका सामना करने के लिए उनमें सुदृढ़ नैतिक मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में सत्य, ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास किया जाता है। इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न शैक्षिक माध्यमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है।

भारत में शिक्षा मुख्यतः दो प्रमुख माध्यमोंकृहिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यमकृके द्वारा प्रदान की जाती है। इन दोनों माध्यमों की शिक्षण पद्धति, वातावरण, सांस्कृतिक प्रभाव तथा सामाजिक परिवेश में कुछ भिन्नताएँ पाई जाती हैं। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रायः आधुनिकता, वैश्वीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है, जबकि हिंदी माध्यम विद्यालयों में भारतीय संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है। ऐसे में यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि इन दोनों माध्यमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के स्तर में कोई अंतर है या नहीं। यदि अंतर पाया जाता है, तो उसके कारणों को समझकर शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। इसी अवस्था में उनके व्यक्तित्व, सोच, दृष्टिकोण और मूल्यों का स्थायी निर्माण होता है। इस आयु में विद्यार्थी सही और गलत के बीच अंतर करना सीखते हैं तथा अपने जीवन के लिए आदर्श और मानदंड निर्धारित करते हैं। यदि इस स्तर पर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का

समुचित विकास नहीं होता, तो इसका प्रभाव उनके भविष्य के जीवन और समाज दोनों पर पड़ सकता है। इसलिए यह अध्ययन आवश्यक है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए।

इस प्रकार का अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों तथा समाज के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट हो सकेगा कि किस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था विद्यार्थियों में बेहतर नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होती है। साथ ही यह अध्ययन शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्यक्रम निर्माण तथा विद्यालयी वातावरण को अधिक मूल्यपरक बनाने में भी मार्गदर्शन प्रदान करेगा। अतः हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज में नैतिक और जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण की दिशा में भी अत्यंत आवश्यक और सार्थक है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शर्मा एवं देवी (2019) ने शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में ''शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों को अंबाला संभाग के विषिष्ट सदंर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'' में विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के जानने के लिए व आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए व आत्म निर्मित प्रश्नावली/उचित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था। 50 विद्यार्थियों को यादृच्छिक रुप से चयनित करके किया गया था। इसकी सांख्यकी तकनीकि 2 x 2 x 2 प्रसरण विश्लेषण थी। प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम था कि शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन मे कोई अन्तर नहीं होता।

प्रवेश कुमार (2020) ने समाज में नैतिक मूल्यों के ह्राससे मानवता का अंतः एक नजर पर अध्ययन किया। एक ही समाज में विभिन्न कालों में नैतिक संहिता भी बदल जाती है नैतिकता नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है यह कर्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरण के प्रतिमानो कासमन्वित रूप है जिसके आधार पर सत्य सत्य अच्छा बुरा उचित अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक केबल से संचालित होती है आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता महत्व अनिवार्यता व अपरिहार्यता को इस बात से सरलता व संक्षिप्त मैं समझा जा सकता है कि संसार के दार्शनिकों मनोवैज्ञानिकों शिक्षा शास्त्रियों नीतिशास्त्रईओ ने नैतिकता को मानव के लिए एक आवश्यक गुण माना है खेद का विषय है कि हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है हमारी शिक्षा शिक्षार्थी में बौद्ध जागृत नहीं करती वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को सीखने के लिए प्रेरित करें और आत्मज्ञान 357 की ओर ले जाए सही शिक्षा व हो सकती है जो शिक्षार्थी में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सकें इसलिए नैतिक मूल्यों में गिरावट होती जा रही है।

गुप्ता एवं शर्मा (2022) ने सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के अनुसार, सोशल मीडिया की परिभाषा में कहा गया है कि सह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोग का एक ऐसा समुह है प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान प्रदान की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है

जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते है, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते है। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्वपुर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। 2000 के दशक के शुरू में सॉफ्टवेयर विकास कर्त्ताओं ने अंतिम इस्तेमाल कर्त्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्ड़वाइड़ वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सकें, ऑनलाइन या वास्तविक समुदायों में प्रयोक्ता–जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्‌भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम "सोशल मीडिया" कहते है। **निष्कर्ष :–** प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव अधिक है। शिक्षा के विभिन्न संकाय में कला संकाय के विद्यालय की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति अधिक सजगता पायी गई तथा वाणिज्य संकाय के छात्र व छात्राओं में कम सजगता पाई गई।

समस्या कथन

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- हिंदी माध्यम : हिंदी माध्यम से अभिप्राय उन विद्यालयों से है जहाँ शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया मुख्य रूप से हिंदी भाषा के माध्यम से संचालित होती है। ऐसे विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण सामग्री, परीक्षा तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ हिंदी भाषा में सम्पन्न होती हैं। प्रस्तुत शोध में हिंदी माध्यम से आशय उन माध्यमिक विद्यालयों से है जहाँ अध्ययनरत विद्यार्थी अपनी शिक्षा हिंदी भाषा के माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं।
- अंग्रेजी माध्यम : अंग्रेजी माध्यम से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जहाँ शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया अंग्रेजी भाषा के माध्यम से सम्पन्न होती है। इन विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण सामग्री, कक्षा में संवाद तथा परीक्षाएँ मुख्यतः अंग्रेजी भाषा में आयोजित की जाती हैं। प्रस्तुत शोध में अंग्रेजी माध्यम से आशय उन माध्यमिक विद्यालयों से है जिनमें विद्यार्थी अपनी शिक्षा अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं।
- माध्यमिक विद्यालय : माध्यमिक विद्यालय वे शैक्षिक संस्थान हैं, जहाँ विद्यार्थी कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा ग्रहण करते हैं। ये विद्यालय विद्यार्थियों को केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध में यह संदर्भ मुख्य रूप से उन विद्यालयों के लिए है जहाँ हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में पढ़ाई होती है।
- विद्यार्थी : विद्यार्थी से तात्पर्य ऐसे शिक्षार्थी से है जो किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय में नियमित रूप से अध्ययन कर रहा हो और ज्ञान, कौशल तथा मूल्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में भाग लेता हो। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी से आशय हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के छात्र छात्राओं से है।
- नैतिक मूल्य : नैतिक मूल्य से अभिप्राय उन आदर्शों, सिद्धांतों और मानकों से है जो व्यक्ति के आचरण, व्यवहार तथा निर्णयों को सही और गलत के आधार पर निर्देशित करते हैं। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन, सहानुभूति, कर्तव्यपरायणता तथा जिम्मेदारी जैसे गुण नैतिक मूल्यों के प्रमुख उदाहरण हैं। प्रस्तुत शोध में नैतिक मूल्य से आशय

विद्यार्थियों के उन व्यवहारिक और मानसिक गुणों से है जो उनके नैतिक आचरण और जीवन दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थी से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु बरेली जनपद में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 के 200 विद्यार्थियों का चयनस्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा जिसमें प्रथम स्तर पर विद्यालयों का चयन एवं द्वितीय स्तर पर विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

उपकरण

नैतिक मूल्य मापनी :– डा0 सुरभी अग्रवाल द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिंदी माध्यम	50	105.12	18.06	2.70	*
अंग्रेजी माध्यम	50	101.03	17.58		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य को दर्शाया गया है। तालिका में हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 105.12 एवं 18.06 प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 101.03 एवं 17.58 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.70 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05)

से अधिक है। अधिक सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्राऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिंदी माध्यम	50	102.20	19.06	1.99	*
अंग्रेजी माध्यम	50	103.18	20.27		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य को दर्शाया गया है। तालिका में हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 102.20 एवं 19.06 प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 103.18 एवं 20.27 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.99 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से अधिक है। अधिक सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा एवं देवी (2019) : शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Scientific Research in Science and Technology, Volume 6, Issue 1, Print ISSN: 2395-6011, Online ISSN: 2395-602X.
- प्रवेश कुमार (2020) : समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रासमे मानवता का अंत: एक नजर पर अध्ययन, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ०प्र०)–244901 म०ज्यो०फु०रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध (स्थापित 1949, NAAC तृतीय चक्र पूर्ण) Website : www.grpgcrampur.com
- गुप्ता एवं शर्मा (2022) : सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्यय़न, 2022, IJCRT, Volume 10, Issue 5, May 2022, ISSN: 2320-2882

Cite this Article:

डॉ. विद्या चरण, "हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.212–219

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अनूप कुमार

For publication of Research Paper title

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-04, Month January, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/